2 अप्रैल 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 36, अंक : 1 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अप्रैल (प्रथम), 2013 (वीर नि. संवत्-2539) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अष्टाह्निका महापर्व सानंद संपन्न

(1) अलवर (राज.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 20 से 27 मार्च तक कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट द्वारा आयोजित श्री पंचमेरु नंदीश्वर विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन, पण्डित राजीवजी शास्त्री, पण्डित किशोरजी शास्त्री बैंगलोर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर आदि विद्वानों का कक्षा/प्रवचन आदि के माध्यम से लाभ मिला। छह सामान्य गुण पर पण्डित सुरेन्द्रजी जैन उज्जैन द्वारा कक्षा ली गई। इस विषय की अन्तिम दिन परीक्षा भी हुई। परीक्षा में 33 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

स्थानीय विद्वान पण्डित किशनचंदजी जैन द्वारा पंचमेरु नंदीश्वर की रचना पर विशेष कक्षा का आयोजन किया गया।

शिविर में सैकड़ों साधर्मियों ने तत्त्वज्ञान का अपूर्व लाभ लिया। इस अवसर पर 100 वर्ष पूर्ण कर चुके वरिष्ठ मुमुक्षु श्री हजारीलालजी जैन बडेरवालों का ट्रस्ट द्वारा विशेष सम्मान किया गया। श्री रतनलाल वन्दना प्रकाशन एवं श्री सुभाषजी अग्रवाल ने आगन्तुक महानुभावों एवं आयोजन के विशेष सहयोगियों का स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मान किया।

कार्यक्रम का निर्देशन पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री ने किया। संपूर्ण कार्यक्रम पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में संपन्न हुआ।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अश्विनजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं पण्डित अभिषेकजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा संपन्न हुये।

(2) कोटा (राज.) : यहाँ मुमुक्षु आश्रम में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 19 से 27 मार्च तक श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. योगेशजी अलीगंज, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित संजयजी हरसौरा आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

श्री प्रेमचंदजी बजाज द्वारा आयोजित इस विधान में प्रतिदिन लगभग 200 जोड़ों ने पूजन की एवं अन्तिम दिन लगभग 1500 साधर्मियों ने पूजन का लाभ लिया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा संपन्न हुये।

दीक्षान्त समारोह संपन्न - यहाँ मुमुक्षु आश्रम में स्थित आचार्य धरसेन दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय का दीक्षान्त समारोह दिनांक 26 मार्च को संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (प्राचार्य-श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय) ने की। इसके अतिरिक्त श्री ज्ञानचंदजी, श्री प्रेमचंदजी बजाज, श्री रतनचंदजी चौधरी, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, श्री मदनलालजी एडवोकेट, श्री एस.एन. दाधीच, श्रीमती कमला भारिल्ल आदि महानुभाव उपस्थित थे।

विगत 5 वर्षों से चल रहे आचार्य धरसेन दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के 7 छात्रों को इस वर्ष आगम शास्त्री की उपाधि प्रदान की गई। इसके पश्चात् अनेक छात्रों ने अपने अनुभव सुनाये। कार्यक्रम का संचालन शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों ने किया। **- रतनचंद चौधरी**

(3) अजमेर (राज.) : यहाँ पुरानी मण्डी स्थित सीमंधर जिनालय में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री समयसार महामंडल विधान किया गया।

इस अवसर पर ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर द्वारा प्रातः ग्रन्थाधिराज समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक के सातवें अधिकार पर प्रवचन हुये।

रात्रि में प्रवचनोपरान्त प्रतिदिन जैन सिद्धांतों का समावेश करते हुए गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें वंदना गंगवाल, मेघा लुहाड़िया, अर्चना गंगवाल, अनिता कासलीवाल, अर्चना जैन, संजय सोनी आदि वक्ताओं ने अतिउत्साह से भाग लिया।

विधान में प्रतिदिन लगभग 100 साधर्मियों ने लाभ लिया। विधान के प्रारंभ में ध्वजारोहण श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, विधान का उद्घाटन श्री पुखराजजी पहाड़िया पीसांगन ने किया। श्रुत विराजमानकर्ता श्री सुशीलजी पहाड़िया परिवार किशनगढ थे।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर के निर्देशन में श्री निशान्तजी जैन बांरा सिवनी के सहयोग से संपन्न हुये। ●

सम्पादकीय – 96

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १७२

प्रस्तुत १७२ गाथा में साक्षात् मोक्षमार्ग का सार क्या है, इस बात की सूचना द्वारा शास्त्र तात्पर्यरूप उपसंहार है।

मूल गाथा इसप्रकार है –

तम्हा णिव्वुदिकामो रागं सव्वत्थ कुणदु मा किंचि।
सो तेण वीदरागो भविओ भवसायरं तरदि।।१७२।।

(हरिगीत)

यदि मुक्ति का है लक्ष्य तो फिर राग किंचित् ना करो।
वीतरागी बन सदा को भवजलधि से पार हो।।१७२।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव मूल गाथा में कहते हैं कि हे मोक्षाभिलाषी! तुम सर्वत्र ही किंचित् भी राग मत करो; क्योंकि पूर्वोक्त कथनानुसार किंचित् राग भी दुःखद है, संसार का कारण है तथा शुभाशुभ राग में हेयबुद्धि से भव्यजीव वीतराग होकर भवसागर से तर जाते हैं।

आचार्य अमृतचन्द्र समयव्याख्या टीका में कहते हैं कि यहाँ साक्षात् मोक्षमार्ग को सारभूत सूचना द्वारा शास्त्र तात्पर्य रूप उपसंहार है।

साक्षात् मोक्षमार्ग में अग्रसर सचमुच वीतरागपना है, इसलिए वास्तव में अर्हतादि के ओर के राग को भी चन्दनवृक्ष की अग्नि की भाँति देवलोकादि के क्लेश की प्राप्ति समझकर मोक्ष का अभिलाषी सब ओर के राग को छोड़कर, अत्यन्त वीतराग होकर दुःखदभव सागर से पार उतर कर शुद्धस्वरूप अमृत जल में अवगाहन कर शीघ्र निर्वाण को प्राप्त करता है।

आचार्य कहते हैं कि विस्तार से बस हो। जयवन्तवर्ते वह वीतरागता जो कि साक्षात् मोक्षमार्ग का सार होने से शास्त्र तात्पर्यभूत हैं।

तात्पर्य दो प्रकार का होता है – १. सूत्र तात्पर्य और २. शास्त्र तात्पर्य। सूत्र तात्पर्य तो प्रत्येक गाथा में प्रतिपादित किया गया है और शास्त्र तात्पर्य में सम्पूर्ण ग्रन्थ का तात्पर्य क्या है? यह बताया जाता है।

सर्व पुरुषार्थों में सारभूत मोक्ष पुरुषार्थ अर्थात् ऐसे मोक्षतत्त्व का प्रतिपादन करने के लिए, जिसमें पंचास्तिकाय और षट्द्रव्य के स्वरूप के प्रतिपादन द्वारा समस्त वस्तुस्वरूप दर्शाया गया है तथा नवपदार्थों के विस्तृत कथन द्वारा जिसमें बंध–मोक्ष के स्वामी तथा बन्ध–मोक्ष के आयतन (स्थान) और बंध–मोक्ष के विकल (भेद) प्रगट किये गये हैं।

निश्चय–व्यवहाररूप मोक्षमार्ग का जिसमें सम्यक्निरूपण किया गया है तथा साक्षात् मोक्ष के कारणभूत परमवीतरागपने में जिसका समस्त हृदय स्थित है, वह शास्त्र तात्पर्य है।

कवि हीरानन्दजी इसी भाव को काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

तातैं निवृत्ति काम कै, सर्व राग परिहार।
वीतरागता लहि भविक, उतरै भवनिधि पार।।२५४।।

(सवैया इकतीसा)

जैसे एक चन्दन कै वृक्ष विषै आगि लगै,
चन्दन कौ जारे जो पै चन्दन की सीत है।
तैसैं धर्मानुराग देवलोक सुख देय,
सो भी सुग्यानी विषै अंतदाह गीत है।।
ऐसैं ज्ञानी जानत है मोखरूप मानत है,
सवै राग त्याग करै राग सौं अतीत है।
दुःख रासि सुखाभास भव का समुद्र तरै,
सुद्धज्ञान सागर मैं सदाकाल नीत है।।२५५।।

(दोहा)

जो साक्षत्पने कहा, मोखपंथ निरवाहि।
वीतराग–पद एक सो, नमत भविकजन ताहि।।२५६।।

इसप्रकार कवि हीरानन्दजी ने भी प्रत्येक गाथा पर दोहा और सवैया इकतीसा छन्दों के माध्यम से गाथाओं में टीका का भावग्रहण करके जो युग के अनुरूप पंचास्तिकाय संग्रह की पद्यों में रचना कर तत्कालीन पाठकों को तो लाभान्वित किया ही है, आज भी विद्वज्जनों को उसकी उपयोगिता असंदिग्ध है। सामान्यजन जो उनकी प्राचीन ग्रामीण हिन्दी भाषा से अनभिज्ञ हैं, उन्हें किंचित् कठिनाई हो सकती है; उसके लिए आवश्यकतानुसार स्थान–स्थान पर मैंने कतिपय छन्दों के सामान्य अर्थ लिखने का प्रयास किया है, आशा है, उनसे पाठकों को स्वाध्याय में सरलता हो जायेगी। तथा मूल गाथा का अर्थ, समय व्याख्या का अर्थ समझ में आ जाने पर हीरानन्दजी की भाषा भी समझ में आ ही जायेगी।

गाथा – १७३

विगत गाथा में साक्षात् मोक्षमार्ग का सार क्या है? इस कथन द्वारा शास्त्र तात्पर्य रूप उपसंहार किया गया है।

प्रस्तुत अन्तिम गाथा १७३ में आचार्य श्री कुन्दकुन्द द्वारा प्रतिज्ञा की पूर्णता सूचित करते हुए ग्रन्थ के समापन की सूचना की गई है।

मूल गाथा इसप्रकार है –

मग्गप्पभावणट्ठं पवयणभत्तिप्पचोदिदेण मया।
भणियं पवयणसारं पंचत्थियसंगह सुत्तं।।१७३।।

(हरिगीत)

प्रवचनभक्ति से प्रेरित सदा यह हेतु मार्ग प्रभावना।
दिव्यध्वनि का सार यह ग्रन्थ मुझसे है बना।।१७३।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव मूल गाथा में कहते हैं कि प्रवचन की भक्ति से प्रेरित होकर मैंने मोक्षमार्ग की प्रभावना हेतु प्रवचन के सारभूत पंचास्तिकाय संग्रह सूत्र कहा है।

टीकाकार आचार्य श्री अमृतचन्द्र देव ने आचार्य श्री कुन्दकुन्द द्वारा की गई प्रतिज्ञा का उल्लेख करते हुए तथा उनके प्रति श्रद्धा का भाव प्रगट करके ग्रन्थ समाप्ति की घोषणा की।

अन्त में टीकाकार ने निम्नांकित पद्य द्वारा अपनी लघुता तथा अकर्तृत्व भाव व्यक्त करते हुए कहा –

स्वशक्ति संसूचित वस्तु तत्वे,
व्याख्या कृतेयं समयस्य शब्दैः।
स्वरूप गुप्तस्य न किंचिदस्ति,
कर्तव्यमेवामृतचन्द सूरेः ।।८।।

अर्थात् अपनी शक्ति से शब्दों ने वस्तु का तत्व भलीभाँति कहा है – उन्हीं शब्दों ने यह समय व्याख्या अर्थात् ''पंचास्तिकाय संग्रह'' शास्त्र की टीका की है, स्वरूपगुप्त अर्थात् अमूर्तिक ज्ञान मात्र स्वरूप में गुप्त अमृतचन्द्र सूरि का इसमें किंचित् भी कर्तव्य नहीं है।

कवि हीरानन्दजी इसी भाव को काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

मारग–परभावन निमित, प्रवचन–भगति–विनोद।
अस्तिकाय–संग्रह कथन, प्रवचनसूत्र प्रमोद।।३११।।

(सवैया इकतीसा)

परम वैराग्यकारी आग्या जिनराजकेरी,
आप माहिं जानी और उपदेस दीना है।
परमरूप आगम–अनुराग–वेग बंध्या,
तातैं वाक्यरचना यौं पूरा ग्रंथ कीना है।।
वस्तुतत्त्व–सूचकतैं द्वादसांगवानी–सार,
पंचासतिकाया नाम संग्रह नवीना है।
सम्यक कारन है दोष का निवारन है,
कुंदकुंदाचार जने आपा सोध लीना है।।३१२।।

(दोहा)

कुन्दकुन्द मुनिराज की, भई प्रतिग्या पूर।
कहना था सो सब कहा, जो जिनसासन मूर।।३१३।।

(दोहा)

सरव दरवमैं लसतु है, गुन–परजाय–सुभाव।
पै तथापि न्यारा विकत, वरनन सुहित बढ़ाव।।३१८।।
मोखनगरकै पथिककौं, निपट निकट यहु पंथ।
गुन–परजैकरि दरव सब, जिनवानी–रसमंथ।।३१९।।

(कुण्डलिया)

जानपना निज मुकत है, जानि सकै तौ जानि।
जानपना जान्या नहीं, तौ बहका भ्रम मानि।।
तौ बहका भ्रम मानि, रिजुमैं सरप समाना।
थाणुरूपकौं पुरुष, सीपकौं रजत पिछाना।।
काललब्धि–बल पाय, आप जिन समझा अपना।
तब सब भ्रम मिटि गया, मुकत निज है ग्यानपना।।३२१।।

(सवैया इकतीसा)

जेते भये सब सिद्ध सिवालै मैं,
ते–ते सबै निजरूप कै जानैं।
और जु होहिं हैं होहिंगै आगै पै,
तेऊ सबै निजरूप पिछानैं।।
तातैं ब जानपना निज जानिए,
आनकौं हेय हिये महि आनैं।
भेदविग्यान सु आप रु आन है,
तातैं ए द्रव्य बखान प्रमानैं।।३२२।।

(दोहा)

जिनवानी–रस–वेद, सबै ठौर नीका लसै।
कहना था सो सब कहा, जो जिनसासन मूर।।३९५।।

(चौपाई)

छहौं दरवकै गुन–परजाये, जिन जीवनकै हिये सुहाये।
तिनही जिय निजपर पहिचान्या, अपना मरम आपमैं जान्या।।
जो जियि दरव भेद नहीं जानै, सो कैसैं करि स्वपरि पिछानै।
जबलगि स्वपर भेद नहिं सूझै, तबलगि आपा कैसैं बूझै।।३९७।।
यातैं गुन–परजैका लखना, दरव माहिं आदेय परखना।
सबमैं चेतन परखनवाला, पाँचौं जड़ वरतैं तिरकाला।।३९८।।
विषय–कषाय धायकरि लागा, मोह–गहल–ममता–रसपागा।
सुत–दारा–धन–तन–मन मेरा, सबै जगतमैं किया बसेरा।।३९९।।
अपना रूप न रंचक जाना, परमैं दौर दौर लपटाना।
देखै सुनै अनुभये सारे, बारबार परभाव निवारै।।४००।।
अब तौ याकौ चहिए चेता, 'को हूँ' 'को पर' जग यहु केता।
विषय–विरमकरि जानै आपा, भेदविग्यान सहज गुन मापा।।४०१।।
बहुत बढ़ाव कहाँलौं कीजै, जानपना अनुभौ–रस पीजै।
जैसा कछु मुनिराज बताया, जानपना पंचासतिकाया।।४०२।।
तैसा याकौं चहिए जाना, और भाँतिकरि जग भटकाना।
कुंकुंद मुनि जग–उपकारी, प्रगट किया जनहिय–हित सारी।।४०३।।
पंचासतिकाया हित सारा, कुंदकुंद मुनिराज विथारा।
जे इस हितका अनुभौ करई, ते अपना गुन सहजहिं धरई।।४०४।।

(कुण्डलिया)

पंचासिकाया सकल, पूरन भया गरंथ।
कुंकुंद मुनिराजकृत, पंचमगतिका पंथ।।
पंचमगतिका पंथ, प्रगट जामैं दिखराया।
आपरूप पररूप, लखन सब मुनिजन भाया।।

आप उपादै लसै, हेय पर–पद सब बंचा।
सकल भेद जगमगै, अस्तिकाया जह पंचा।।४०५।।

(सोरठा)

पंचमगतिका पंथ, सिवगामीकौं प्रगट है।
जिनवानी–रस–मंथ, कालजोग चेतन लहै।।४०६।।

कवि हीरानन्दजी ने उपर्युक्त छन्दों में जो कहा, उसका भावार्थ यह है कि ''जिनधर्म की प्रभावना के निमित्त से एवं प्रवचन भक्ति के प्रमोद से मैंने पंचास्तिकाय संग्रह की हिन्दी काव्य में रचना की है।

जिनराज के परम वैराग्य प्रेरक उपदेश को जानकर मैंने आगम के अनुरागवश पंचास्तिकायों का उपदेश करके यह काम पूरा किया है। इस पंचास्तिकाय संग्रह में द्वादशांग वाणी का सार भरा है।

आगे के सवैया में कवि ने कहा है कि जितने भी आज तक सिद्ध हुए वे सब निजस्वभाव के जानने से ही हुए हैं तथा जो आगे होंगे वे भी निजस्वरूप की पहचान से ही होंगे। इसलिए पर व पर्यायों से भेद विज्ञान करके अब अपने–अपने ज्ञायक स्वरूप शुद्धात्मा को जानें।

आगे चौपाई में कहा कि जिन्होंने छहों द्रव्यों के गुण–पर्यायों को भलीभाँति जाना, उन्हें ही अपने–पराये की पहचान हुई है। जो जीव और परद्रव्यों के भेद–प्रभेद नहीं जानेंगे, वे न स्वयं को जान पायेंगे और न अन्य को ही नहीं पहचान सकेंगे। इन सब द्रव्यों में एक जीव ही चेतन है, शेष पाँच द्रव्य अचेतन हैं। संसारी जीवों ने मोहवश स्वयं को नहीं जाना, स्त्री, पुत्र परिवार एवं तन–मन–धन में ही अटका रहा, इस कारण संसार में भटकता रहा।

कवि कहते हैं कि अब तो संसारी जीवों चेत जाना चाहिए, अन्यथा चतुर्गति का भ्रमण नहीं मिटेगा। वे कुन्दकुन्द मुनिराज परम उपकारी हैं, जिन्होंने जगत के जीवों को पाँच अस्तिकाय की स्वतंत्रता का ज्ञान कराकर उनका अज्ञान दूर कर दिया है।

इसप्रकार मुनि कुन्दकुन्ददेव ने पंचास्तिकाय लिखकर पंचम गति का पन्थ दिखा दिया है और आचार्य अमृतचन्द्र ने टीका में विस्तार से स्पष्टीकरण करके तत्त्वज्ञान को और भी सुगम कर दिया तथा कवि हीरानन्दजी ने हिन्दी कवित्त रचकर हिन्दी भाषियों का मार्ग सुगमकर दिया। इस सबके बाद गुरुदेव कानजीस्वामी ने पंचास्तिकाय पर प्रवचन करके पंचास्तिकाय का हृदय ही खोलकर रख दिया। एतदर्थ सभी को उक्त पूज्य मुनीन्द्र वृन्द को सविनय वंदन तथा कविवर हीरानन्दजी एवं गुरुदेव श्री को यथायोग्य नमन एवं अभिनन्दन है। ●

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

जैनपथप्रदर्शक के स्वामित्व का विवरण
फार्म नं. 4 नियम नं. 8

समाचार पत्र का नाम	:	जैन पथप्रदर्शक (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान	:	श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर–15 (राज.)
प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
मुद्रक	:	श्री प्रमोदकुमार जैन (भारतीय) जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर (राज.)
प्रकाशक का नाम	:	ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर –15 (राज.)
सम्पादक का नाम	:	श्री रतनचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर –15 (राज.)
स्वामित्व	:	पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर –15 (राज.)

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 2–4–2013

प्रकाशक :
ब्र. यशपाल जैन
ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

हार्दिक बधाई

1. अलीगढ–एटा (उ.प्र.) निवासी डॉ. मुकेश चन्द्र जैन की सुपुत्री सौ.का. पल्लवी जैन का चि. प्रतीक जैन सुपुत्र श्री योगेश कुमार जैन कायमगंज के साथ शुभ विवाह दिनांक 31 जनवरी 2013 को संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 251/– रुपये प्राप्त हुये।

2. पिड़ावा (राज.) निवासी चि. विवेक जैन शास्त्री का शुभ विवाह सौ. प्रज्ञा जैन के साथ संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 100/– रुपये प्राप्त हुये।

3. चेन्नई निवासी पण्डित जम्बूकुमार जैन एवं श्रीमती रेवती जैन की सुपुत्री सौ.कां. मनीषा जैन का शुभ विवाह श्री आदिनाथ के सुपुत्र चि. बालाजी जैन के साथ दिनांक 7 फरवरी को संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 300/– रुपये प्राप्त हुये।

4. भीलवाड़ा (राज.) निवासी श्री शान्तिलालजी चौधरी के सुपौत्र अभिषेक जैन एवं विशुद्धि जैन (सुपुत्र सुनील–भावना जैन) की 9वीं वर्षगांठ के अवसर पर 1100/– रुपये पूजन तिथि के रूप में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु प्राप्त हुये।

उक्त सभी को जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं
पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा आयोजित

47वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 21 मई 2013 से 7 जून 2013 तक

प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में लगने वाला प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 21 मई से 7 जून 2013 तक देवलाली-नासिक (महा.) में आयोजित होने जा रहा है।

प्रशिक्षण शिविर में देवलाली पधारने हेतु आप सभी को हार्दिक आमंत्रण है।

विशिष्ट कार्यक्रम -

ध्वजारोहण एवं शिविर उद्घाटन समारोह –	21 मई
अ.भा. जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन –	26 मई
टोडरमल स्नातक परिषद का महाराष्ट्र प्रान्तीय सम्मेलन –	1 जून
अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् द्वारा आयोजित विद्वत्संगोष्ठी –	2 जून
प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन –	6 जून
दीक्षान्त एवं समापन समारोह –	7 जून

हार्दिक अनुरोध :-

1. आपके यहाँ से कितने भाई-बहिन एवं प्रशिक्षणार्थी शिविर में पधार रहे हैं व कब से कब तक रहेंगे, इसकी पूर्व सूचना 1 मई तक जयपुर कार्यालय को अनिवार्य रूप से भिजवायें ताकि आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

2. श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर,
जयपुर 302015 (राज.) फोन-0141-2705581, 2707458
Email-ptstjaipur@yahoo.com

देवलाली का पता – पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, कहान नगर, लाम रोड, देवलाली, नासिक-422401 (महा.)
फोन नं. (0253) 2491044

डॉ. भारिल्ल का 2013 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 31वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्न स्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन, फैक्स एवं ई.मेल दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे। डॉ. भारिल्ल एवं पं. संजीवकुमारजी गोधा के कार्यक्रमों का आयोजन (**JAANA**) द्वारा किया जा रहा है। डॉ. भारिल्ल का नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है -

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	लन्दन	**Bhimji Bhai Shah 0044-1923826135** **E-mail : bhimji@yahoo.com** **Jayanti Bhai (Gutka)** **0044-208 907 8257 (H)** **E-mail : jdgudhka@intraport.co.uk**	7 से 13 जून
2.	न्यूयार्क	**Abhay/Ulka Kothari C : 516-314-6937** **Emil-ukothari@verizon.net**	14 से 17 जून
3.	डलास	**Atul Khara R : 972-8676535** **O : 972-424-4902 C : 469-831-2163** **Email - insty@verizon.net**	18 से 24 जून
4.	शिकागो	**Niranjan Shah (R) 847-330-1088** **Bipin Bhayani (O) 815-939-3190** **(R) 815-939-0056**	25 से 29 जून
5.	डेट्रोइट	**SHIBIR & CONVENTION** **Atul Khara C : 469-831-2163** **Email - insty@verizon.net**	30 जून से 6 जुलाई
6.	शिकागो	**Niranjan Shah (R) 847-330-1088** **Bipin Bhayani (O) 815-939-3190** **(R) 815-939-0056**	7 से 9 जुलाई
7.	लॉस एंजिल्स	**Naresh Palkhiwala (R) 562-404-1729** **(O) 626-814-8425 ext. 8725** **E-mail : naresh.palkhiwala@westcov.org**	10 से 14 जुलाई
8.	सिंगापुर	**Ashok Patni 006596357834**	16 से 21 जुलाई

पण्डित संजीवकुमारजी गोधा का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर को विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी (**JAANA**) ने धर्मप्रचारार्थ अमेरिका और कनाडा में आमंत्रित किया है, उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है -

30 मई से 6 जून - **डलास**, 7 से 13 जून - **शिकागो**, 14 से 20 जून - **मियामी**, 21 से 29 जून - **टोरंटो (कनाडा)**, 30 जून से 4 जुलाई - **डेट्रोइट।**

आप उन्हीं स्थानों पर रुकेंगे, जहाँ डॉ. भारिल्ल रुकेंगे।

रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का

113 सातवाँ प्रवचन

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

अभी तक आत्मा को अनेक आगम प्रमाणों और युक्तियों से परोक्ष ही सिद्ध करते आ रहे हैं; अत: शिष्य के चित्त में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि जब आत्मा अनुभव में परोक्षरूप से ही ज्ञात होता है तो फिर आगम में उसे प्रत्यक्ष क्यों कहा, अनुभव प्रत्यक्ष क्यों कहा ?

उक्त प्रश्न के उत्तर में पण्डित टोडरमलजी एक बार फिर दुहराते हैं कि अनुभव में तो आत्मा परोक्ष ही है। उसके बाद उसे परमागम में प्रत्यक्ष कहने की अपेक्षा स्पष्ट करते हैं, प्रत्यक्ष कहने का कारण बताते हैं।

कहते हैं कि आत्मा नहीं, अपितु आत्मस्वरूप में परिणाम मग्न होने से जो आनन्द का वेदन होता है, वह प्रत्यक्ष है; क्योंकि जो स्वानुभव का स्वाद आया, आनन्द की अनुभूति हुई; वह शास्त्रों में पढ़-पढ़कर या गुरु मुख से सुन-सुनकर नहीं हुई है; अपितु उसने उस आनन्द का साक्षात् वेदन किया है, उस आनन्द को भोगा है।

वे अपनी बात को स्पष्ट करते हुए मिश्री खानेवाले अन्धे व्यक्ति का उदाहरण देते हैं। जन्मान्ध व्यक्ति ने मिश्री का रूप-रंग और आकार-प्रकार को आँखवालों से सुनकर जाना है; पर उसका स्वाद, उसके रस का ज्ञान-आनन्द किसी के कहने मात्र से नहीं जाना है; अपितु स्वयं चखा है; उसे चख कर मात्र जाना ही नहीं है, अपितु उसका आनन्द लिया है, वेदन किया है, भोगा है।

सुख-दु:ख की अनुभूति के साथ जानने को वेदन कहते हैं।

अनुभव को प्रत्यक्ष कहने का एक कारण तो यह है और दूसरा कारण बताते हुए पण्डितजी कहते हैं कि **लगभग प्रत्यक्ष की भाँति विशद होने से, स्पष्ट होने से, निर्मल ज्ञान होने से उसे प्रत्यक्ष कहने का व्यवहार है।**

इसप्रकार के अनेक प्रयोग लोक में पाये जाते हैं। जैसे हम कहते हैं कि आज मैंने तुम्हें स्वप्न में प्रत्यक्ष देखा। तुम मंदिर में दर्शन कर रहे थे और मैं सामने आया। न केवल तुम्हें देखा, अपितु तुमसे बात भी की थी।

सामनेवाला कहता है कि मैं तो मंदिर गया ही नहीं तो तुमने मुझे मंदिर में प्रत्यक्ष कैसे देखा ?

तब वह कहता है कि मंदिर में मैं भी कहाँ गया था। मैं भी घर में ही सो रहा था।

''ऐसे में तू मुझे मंदिर में कैसे देख सकता है ?''

''क्यों नहीं, क्योंकि मैंने तुझे स्वप्न में प्रत्यक्ष देखा था।''

जिसप्रकार स्पष्टता के आधार पर स्वप्न में देखने को भी प्रत्यक्ष कह दिया जाता है; उसीप्रकार यहाँ भी आत्मा के जानने को व्यवहार से प्रत्यक्ष देखा कहा गया है।

अरे, भाई ! स्वप्न में देखना तो सही नहीं है। उसके समान कहकर तो तुम अनुभव के प्रत्यक्षपने को एकदम अभूतार्थ कह रहे हो।

जब हमारे पास प्रत्यक्ष ज्ञान है ही नहीं, फिर भी प्रत्यक्ष कहना किसप्रकार का व्यवहार होगा। इस बात को उदाहरण से पण्डितजी ने स्पष्ट किया है। जिसप्रकार स्वप्न में वह व्यक्ति था ही नहीं; उसीप्रकार प्रत्यक्ष ज्ञान है ही नहीं तो फिर क्या कहें ?

अरे, भाई ! मति-श्रुतज्ञान परोक्ष हैं और उनके द्वारा ही आत्मा को जाना गया है। आत्मा का ज्ञान तो प्रत्यक्ष हुआ ही नहीं, आनन्द का वेदन प्रत्यक्ष जैसा हुआ है। यही अपेक्षा है।

जहाँ जो अपेक्षा हो उसे सावधानी पूर्वक सही-सही समझना चाहिए।

उसको प्रत्यक्ष कहने का एक कारण यह भी हो सकता है कि उसे कोई काल्पनिक न कहने लगे, कल्पनालोक में विचरण करना न मानने लगे। लोक में प्रत्यक्ष देखे गये पदार्थों का विश्वास जिस दृढ़ता के साथ किया जाता है; वैसा पढ़ी-सुनी बात का नहीं। **कोई इसे पढ़ी-सुनी बात के समान ही न मानने लगे, उससे कुछ अधिक है यह - यह बताने के लिए भी उसे प्रत्यक्ष कहा जा सकता है। तात्पर्य यह है कि उसकी सत्ता वास्तविक है। वह आनन्द भी सिद्धों की जाति के आनन्द के समान है।**

अगले प्रश्न और उनके उत्तर पण्डितजी इसप्रकार प्रस्तुत करते हैं -

''यहाँ प्रश्न : ऐसा अनुभव कौन गुणस्थान में होता है?

उसका समाधान : चौथे से ही होता है, परन्तु चौथे में बहुत काल के अन्तराल से होता है और ऊपर के गुणस्थानों में शीघ्र-शीघ्र होता है।

फिर यहाँ प्रश्न : अनुभव तो निर्विकल्प है, वहाँ ऊपर के और नीचे के गुणस्थानों में भेद कैसे होगा ?

उसका समाधान : परिणामों की मग्नता में विशेष है। जैसे दो पुरुष नाम लेते हैं और दोनों ही के परिणाम नाम में हैं; वहाँ एक तो मग्नता विशेष है और एक को थोड़ी है -

उसीप्रकार जानना।

फिर प्रश्न : यदि निर्विकल्प अनुभव में कोई विकल्प नहीं है तो शुक्लध्यान का प्रथम भेद पृथक्त्ववितर्कवीचार कहा, वहाँ 'पृथक्त्व-वितर्क' - नाना प्रकार के श्रुत का 'वीचार' - अर्थ-व्यंजन-योगसंक्रमण - ऐसा क्यों कहा ?

समाधान - कथन दो प्रकार है - एक स्थूलरूप है, एक सूक्ष्मरूप है। जैसे स्थूलता से तो छठवें ही गुणस्थान में सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत कहा और सूक्ष्मता से नववें गुणस्थान तक मैथुन संज्ञा कही; उसीप्रकार यहाँ अनुभव में निर्विकल्पता स्थूलरूप कहते हैं। तथा सूक्ष्मता से पृथक्त्व-वितर्क वीचारादिक भेद व कषायादिक दसवें गुणस्थान तक कहे हैं।

वहाँ अपने जानने में व अन्य के जानने में आये ऐसे भाव का कथन स्थूल जानना तथा जो आप भी न जाने और केवली भगवान ही जानें ह्न ऐसे भाव का कथन सूक्ष्म जानना। चरणानुयोगादिक में स्थूलकथन की मुख्यता है और करणानुयोग में सूक्ष्मकथन की मुख्यता है - ऐसा भेद अन्यत्र भी जानना।

इसप्रकार निर्विकल्प अनुभव का स्वरूप जानना।[१]''

उक्त प्रश्नों का उत्तर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी इसप्रकार स्पष्ट करते हैं -

''चतुर्थ गुणस्थान का प्रारम्भ ही ऐसे निर्विकल्प स्वानुभवपूर्वक होता है; सम्यग्दर्शन कहो, चौथा गुणस्थान कहो या धर्म का प्रारम्भ कहो - वह ऐसे स्वानुभव के बिना नहीं होता।[२]

चौथे गुणस्थान में ऐसा अनुभव कभी-कभी होता है, बाद में जैसे-जैसे भूमिका बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे काल की अपेक्षा से बार-बार होता है और भाव की अपेक्षा से लीनता भी बढ़ती जाती है।[३]

स्वानुभव की जाति तो सभी गुणस्थानों में एक है, चैतन्यस्वभाव में ही सभी का उपयोग लगा हुआ है; परन्तु इसमें परिणामों की मग्नता गुणस्थान अनुसार बढ़ती जाती है। सातवें गुणस्थान में स्वानुभव में जैसी लीनता है, वैसी तीव्र लीनता चौथे गुणस्थान में नहीं है; इसप्रकार निर्विकल्पता दोनों के होने पर भी परिणाम की मग्नता में विशेषता है।[४]

इसप्रकार गुणस्थान अनुसार स्वानुभव की विशेषता जाननी चाहिए। ज्यों-ज्यों गुणस्थान बढ़ता जाये, त्यों-त्यों कषायें घटती जायें और स्वरूप में लीनता बढ़ती जाये।[१]''

यद्यपि अनुभव चौथे गुणस्थान में होता है; तथापि चौथे गुणस्थान में होनेवाले अनुभव में परिणामों की मग्नता उसप्रकार की नहीं होती, जैसी पंचमादि गुणस्थानों में होती है। ऊपर-ऊपर के गुणस्थानों में होनेवाले अनुभव में परिणामों की मग्नता की गहराई निरन्तर बढ़ती ही जाती है। न केवल गहराई, अपितु आगे-आगे मग्नता का काल भी बढ़ता जाता है और अन्तराल (वियोगकाल) कम होता जाता है।

यहाँ महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि जब अनुभव में विकल्प नहीं होते और ध्येय का परिवर्तन नहीं होता, ज्ञेय का भी परिवर्तन नहीं होता तो फिर शुक्लध्यान के पहले पाये में अर्थसंक्रान्ति, व्यंजनसंक्रान्ति और योगसंक्रान्ति कैसे होती है ?

संक्रान्ति शब्द का अर्थ बदलना होता है। जब सूर्य एक राशि से बदलकर दूसरी राशि में जाता है, तब उसे संक्रान्ति कहते हैं और उस काल को संक्रान्तिकाल कहते हैं। लोक में भी जब विशेष बदलाव का काल चलता है, तब उसे संक्रान्तिकाल कहा जाता है।

सूर्य की राशिपरिवर्तन संबंधी संक्रान्ति प्रत्येक माह की १४वीं तारीख को होती है। वर्ष के आरंभ में १४ जनवरी को सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है; अत: उसे मकर संक्रान्ति कहते हैं। वर्षारंभ में होने के कारण लोक में उसे पर्व के रूप में मनाया जाता है।

(क्रमश:)

१. रहस्यपूर्णचिट्ठी : मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ ३४७
२. अध्यात्म संदेश, पृष्ठ ९६ ३. वही, पृष्ठ ९८
४. वही, पृष्ठ ९८

१. अध्यात्म संदेश, पृष्ठ ९९

कर्मदहन विधान संपन्न

टीकमगढ (म.प्र.) : यहाँ सीमंधर जिनालय ज्ञान मन्दिर में दिनांक 19 से 23 फरवरी तक कर्मदहन महामंडल विधान का आयोजन एवं चैतन्यधाम का शिलान्यास समारोह किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित भानुजी ललितपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधान में 100 इन्द्र-इन्द्राणियों के अतिरिक्त सागर, घुवारा, द्रोणगिरि, महरौनी, बानपुर, ललितपुर, दिल्ली आदि अनेक स्थानों से पधारकर सैंकड़ों साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

दिनांक 22 फरवरी को चैतन्यधाम का शिलान्यास हुआ।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा संपन्न कराये गये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

17 से 21 अप्रैल	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
22 से 27 अप्रैल	भोपाल (कोहेफिजा)	सिद्धचक्र विधान एवं महावीर जयन्ती
28 अप्रैल	भोपाल (मण्डीदीप)	मन्दिर शिलान्यास

2 अप्रैल 2013, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

क्या आप चाहते हैं ?

- आपके बालकों का जीवन जैन तत्त्वज्ञान के संस्कारों से सुशोभित हो।
- वे जैन तत्त्वज्ञान के ठोस विद्वान बनें।
- वे स्वपर के कल्याण में अपना जीवन लगायें।

यदि हाँ तो शीघ्रता करें,

अपने बालकों को जैनदर्शन शास्त्री कराने हेतु श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर में प्रवेश दिलायें।

इस विद्यालय में –

– दसवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण मात्र 50 छात्रों को उपाध्याय कनिष्ठ (11वीं कक्षा) में प्रवेश दिया जायेगा।

– छात्र यहाँ 5 वर्ष तक रहकर राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय से जैनदर्शन शास्त्री (स्नातक के समकक्ष) की डिग्री प्राप्त करते हैं, जो पूरे देश में मान्य है।

– छात्रों की आवास/भोजन/शिक्षा/स्वास्थ्य की सभी उच्चस्तरीय सुविधायें संस्था द्वारा नि:शुल्क उपलब्ध करायी जाती हैं।

प्रवेशार्थी छात्रों को –

21 मई से 7 जून 2013 तक देवलाली-नासिक (महा.) में आयोजित प्रशिक्षण शिविर में रहना अनिवार्य है। महाविद्यालय में प्रवेश हेतु छात्रों का चयन इसी शिविर में होता है।

विशेष जानकारी एवं प्रवेश आवेदन पत्र प्राप्त करने हेतु संपर्क करें–

पण्डित रतनचंद भारिल्ल, प्राचार्य | पण्डित शान्तिकुमार पाटील, उपप्राचार्य | पण्डित सोनू शास्त्री, अधीक्षक

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर
मो. 9785643277 (सोनूजी)

ब्र. यशपालजी द्वारा धर्मप्रभावना

नागपुर (महा.) : यहाँ मुमुक्षु मण्डल के विशेष आग्रह पर ब्र. यशपालजी जैन दिनांक 7 से 18 मार्च तक पधारे। आपके द्वारा कर्म सिद्धांत को समझने के लिए आवश्यक विषय दशकरण पर दोनों समय विशेष कक्षायें ली गई। करणानुयोग जैसा कठिन विषय होते हुए भी प्रतिदिन श्रोताओं की अच्छी उपस्थिति रहती थी।

इस विषय की कक्षाओं की सफलता को देखते हुए आगामी नवम्बर माह में इस विषय पर एक संगोष्ठी अलवर (राज.) में आयोजित करने का निर्णय लिया गया है, जिसमें देश के करणानुयोग के विशेषज्ञ अनेक विद्वानों को आमंत्रित किया जायेगा।

10वीं उत्तीर्ण छात्रों को अपूर्व अवसर

ध्रुवधाम-बांसवाड़ा : यहाँ 'आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय' में सत्र 2013-14 हेतु 10वीं उत्तीर्ण छात्रों को कक्षा 11 में (शास्त्री तक 5 वर्षीय पाठ्यक्रम हेतु) प्रवेश दिया जा रहा है।

विशेषतायें – (1) आवास, भोजन, शिक्षण सभी नि:शुल्क, (2)शत-प्रतिशत परीक्षा-परिणाम, (3) जिनेन्द्र-पूजन, प्रवचन, गोष्ठी, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से सर्वांगीण विकास, (4) अंग्रेजी/संस्कृत की अतिरिक्त कक्षायें, (5) गुरुदेवश्री के सी.प्रवचन, (6) हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, जैनदर्शन विषयों का अध्ययन कर संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री की डिग्री, (7) किसी भी प्रतियोगी परीक्षा के योग्य।

कक्षा 10 में कम से कम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त छात्र प्रवेश हेतु संपर्क कर सकते हैं। **संपर्क सूत्र –** ध्रुवधाम, पोस्ट-कूपड़ा, जिला-बांसवाड़ा 327001 (राज.) महिपालजी ज्ञायक – 9414103475, धनपालजी ज्ञायक – 9414101432

प्रवेश प्रारंभ

सोनागिर : यहाँ 'आचार्य कुन्दकुन्द विद्या निकेतन' में छात्रों के भविष्य एवं आजीविका को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष कॉमर्स और गणित का कोर्स भी प्रारंभ कर दिया गया है। विद्यालय को भी कक्षा 8 से कक्षा 12 तक बढाया गया है। जो छात्र कक्षा 8 और कक्षा 9 में प्रवेश लेना चाहते हैं, वे छात्र विद्यालय से फार्म मंगाकर 10 अप्रैल तक और विलम्ब शुल्क सहित 20 अप्रैल 2013 तक कार्यालय में जमा करा देवें, जिससे उन्हें 25 से 28 अप्रैल तक होने वाले साक्षात्कार शिविर में बुलाया जा सके। (छात्रों की लौकिक-शिक्षा-व्यवस्था 'सरस्वती विद्या मन्दिर भरतगढ दतिया' में कर दी गई है।) **संपर्क सूत्र –** विजय शास्त्री, आचार्य कुन्दकुन्द विद्या निकेतन, कुन्दकुन्द नगर सोसायटी, जिला-दतिया (म.प्र.) मोबा. 08120580068

प्रकाशन तिथि : 28 मार्च 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127